सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश

(विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध)

प्रांतीय प्रश्नमंच एवं बौद्धिक समारोह

सत्र 2018-19

प्रांतीय कार्यालय

'प्रज्ञादीप' हर्षवर्धन नगर, भोपाल- 462 003

दूरभाषः (0755) : 2761225, ई-मेल : *svp_vb@yahoo.co.in*

Web: *www.vidyabhartimp.org*

प्रधानाचार्यों से निवेदन

- गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी बौद्धिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न होने जा रही है।
- इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन जिला, विभाग, प्रान्त एवं क्षेत्र स्तर पर होता है, जिसकी नियमावली एवं कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी सभी विद्यालयों को प्रांत द्वारा भेजी जाती है। नियमावली में दिये गये सभी कार्यक्रम विद्यालयों में लागू करना अनिवार्य है। जिससे सभी कार्यक्रम प्रभावी ढंग से सम्पन्न हो, इसका हमें प्रयत्न करना है।
- प्रधानाचार्यों से आग्रह है कि संस्कृति बोध परियोजना शिशु मंदिर योजना का एक विषय मात्र बनकर न रह जाये अपितु सम्पूर्ण विद्यालय परिवार, प्रबन्ध समिति, आचार्य-गण, कर्मचारीगण, अभिभावक-गण, भैया/बहिनों एवं अन्य विद्यालयों से जुड़ने वाला विषय बने। इसके लिये आन्दोलनात्मक प्रयास आवश्यक हैं।
- ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति की मुख्य धारा से जुड़े यही अपेक्षा है।

भवदीय

(मोहनलाल गुप्ता)
प्रादेशिक सचिव

प्रांतीय प्रश्न मंच बौद्धिक समारोह

सत्र 2018-19

प्रतियोगिता की वर्ग रचना

1.	शिशु वर्ग	-	कक्षा चतुर्थी एवम् पंचमी
2.	बाल वर्ग	-	कक्षा षष्ठी से अष्टमी तक
3.	किशोर वर्ग	-	कक्षा नवमी से द्वादशी तक
4.	तरुण वर्ग	-	कक्षा एकादशी से द्वादशी (केवल प्रश्न मंच पत्र वाचन हेतु)

प्रतियोगिता का स्तर, आयोजन एवम् शुल्क

1.	**विद्यालय स्तर**	-	तिथि प्रधानाचार्य/प्राचार्य निर्धारित करेंगे।
2.	**जिला स्तर**	-	तिथि/स्थान विभाग समन्वयक निश्चित् करेंगे।
3.	**विभाग स्तर**	-	तिथि/स्थान विभाग समन्वयक निश्चित् करेंगे।

4. प्रांत स्तर (मध्यभारत)

दिनांक	-	**01 अक्टूबर से 02 अक्टूबर 2018 तक** (01 अक्टूबर प्रात: 10:00 बजे उद्घाटन समारोह रहेगा)
स्थान	-	**सरस्वती शिशु विद्या मंदिर गुना जिला-गुना**
शुल्क	-	400 रु. प्रति विद्यार्थी एवं संरक्षक आचार्य। (शुल्क व मार्ग व्यय विद्यालय द्वारा देय होगा) सम्पर्क: 9424400245,

प्राचार्य श्री अंकित शुक्ला

5. क्षेत्र स्तर

दिनांक - **29 से 30 अक्टूबर की शाम तक**
(29 अक्टूबर दोपहर 02 बजे उद्घाटन समारोह रहेगा)

स्थान - **सरस्वती शिशु विद्या मंदिर तिलक नगर विलासपुर (छत्तीसगढ़ प्रांत)**

शुल्क - 400 रु. प्रति विद्यार्थी एवं संरक्षक आचार्य।
(शुल्क प्रांत व प्रवास व्यय विद्यालय द्वारा देय होगा)

6. अखिल भारतीय स्तर-

दिनांक - **23 नवम्बर से 25 नवम्बर 2018 तक (22 नवम्बर की शाम तक पहुँचना है।)**

स्थान - **विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, संस्कृति भवन सलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)**

शुल्क - 600/- रू. प्रति विद्यार्थी एवम् संरक्षक आचार्य।
(इसके अतिरिक्त 50/-प्रति भैया/बहिन पंजीयन शुल्क होगा। अखिल भारतीय स्तर पर शुल्क एवम् प्रवास व्यय प्रांतीय समिति द्वारा देय होगा)

प्रांतीय बौद्धिक प्रश्नमंच समारोह में अपेक्षित सहभागिता संख्या

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	जिले से प्रांत स्तर तक						क्षेत्र स्तर पर					
		सम्मिलित कौन होगा	शिशु	बाल	किशोर	तरूण	योग	सम्मिलित कौन होगा	शिशु	बाल	किशोर	तरूण	योग
1.	व्यक्तिगत गीत	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
2.	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
3.	रंगोली	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
4.	तात्कालिक भाषण	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
5.	चित्रकला	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
6.	गीता पाठ	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
7.	प्रश्नमंच	केवल विजेता	3	3	3	3	12	केवल विजेता	3	3	3	3	12
8.	पत्रवाचन छात्र	प्रथम	1	1	1	1	4	प्रथम	1	1	1	1	4
9.	पत्रवाचन आचार्य	प्रथम	0	0	0	0	1	प्रथम	0	0	0	0	1
10.	तबला वादन	प्रथम	1+1	1+1	1+1	0	3+3	प्रथम	1+1	1+1	2+2	0	4+4
11.	शास्त्रीय गायन	प्रथम	1+2	1+2	1+2	0	3+6	प्रथम	1+2	1+2	1+4	0	3+6
12.	शास्त्रीय नृत्य	प्रथम	1+3	1+3	1+3	0	3+9	प्रथम	1+3	1+3	2+6	0	4+12
13.	एकल अभिनय	प्रथम	1	1	1	0	3	प्रथम	1	1	2	0	4
14.	अंताक्षरी	प्रथम	3	3	3	0	9	प्रथम	3	3	3	0	9
15.	स्वरचित कविता	प्रथम	1	1	1	0	3						
16.	एकल भजन	प्रथम	1	1	1	0	3						
17.	वन्दे मातरम्	केवल विजेता	3	3	3	0	9						
महायोग			**22+6**	**22+6**	**22+6**	**4**	**71+18**	**महायोग**	**17+6**	**17+6**	**27+12**	**4**	**66+24**

विशेषः-

1. संस्कृति ज्ञान प्रश्नमंच, छात्र पत्र वाचन चारों वर्गो के लिए एवं आचार्य पत्र वाचन की प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर तक आयोजित होगी।
2. क्षेत्र स्तर पर किशोर वर्ग की प्रतियोगिता में प्रान्त स्तर के प्रथम एवं द्वितीय दोनों प्रतिभागी भाग लेंगे, परन्तु प्रश्नमंच में केवल विजेता ही भाग लेंगे।

बौद्धिक प्रतियोगिता

प्रतियोगिता के समूह निम्नानुसार रहेंगे :-

समूह 'क' 1. व्यक्तिगत गीत (हिन्दी/संस्कृत)
2. निबन्ध प्रतियोगिता 3. रंगोली प्रतियोगिता

समूह 'ख' 1. चित्रकला 2. गीता पाठ
3. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

समूह 'ग' 1. प्रश्नमंच प्रतियोगिता। 2. पत्रवाचन छात्र
3. पत्रवाचन आचार्य

समूह 'घ' 1. तबला वादन 2. शास्त्रीय गायन 3. शास्त्रीय नृत्य
4. एकल अभिनय 5. मानस अन्त्याक्षरी

समूह 'ङ' 1. स्वरचित कवितापाठ
2. वन्देमातरम्

आचार्य पत्रवाचन का विषय:-

विश्व शांति में भारत की भूमिका

भैया-बहिन के विषय:-

शिशु वर्ग - देश हमें देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।
बाल वर्ग - हम करें राष्ट्र आराधना।
किशोर वर्ग - मानवता का त्रास हरें हम।
तरुण वर्ग - विश्व जानता है भारत का अपराजेय रुधिर।

- ***प्रश्नमंच एवं बौद्धिक प्रतियोगिता के नियम :-***

01. प्रतियोगिता संबंधी जो नियम दिए गए है, उनमे किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करें।

02. क्रीडा प्रतियोगिता/बौद्धिक प्रतियोगिता/विज्ञान मेला/वैदिक गणित इन प्रतियोगिताओं में से किसी एक समूह की प्रतियोगिता में एक ही प्रतिभागी भाग ले सकता है।

03. समूह ‘क’, समूह ‘ख’, समूह ‘घ’ एवं ‘ङ’ में उल्लेखित प्रतियोगिता में से प्रतिभागी किसी एक-एक प्रतियोगिता में भाग ले सकेगा।

04. समूह ‘ग’ में भाग लेने वाले प्रतिभागी किसी भी अन्य प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगें।

05. जिले से प्रांत स्तर तक केवल प्रथम स्थान प्राप्त प्रतिभागी ही भाग लेंगे। क्षेत्र स्तर पर शिशु एवं बाल वर्ग के प्रथम प्रतिभागी ही भाग लेंगे। क्षेत्र स्तर पर किशोर वर्ग के प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतिभागी भाग ले सकेंगे। प्रश्नमंच एवं पत्रवाचन में क्षेत्र पर भी केवल विजेता दल ही भाग लेंगे।

06. प्रत्येक प्रतियोगिता के समाप्त होने पर विजेता के नामो की घोषणा तत्काल की जाएगी।

07. समूह ‘क‘ ‘ख‘ , एवं ‘घ’ की प्रतियोगिताएं क्षेत्र स्तर तक होगी। समूह ‘ग’ की प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर तक होगी।

08. समूह ‘ङ’ की प्रतियोगिताएँ प्रान्त स्तर तक होगी।

09. समूह ‘ग’ संस्कृति ज्ञान प्रश्न मंच एवं पत्रवाचन किशोर वर्ग में कक्षा 9 व 10, एवं तरूण वर्ग में कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थी भाग लेंगे। प्रश्नमंच एवं पत्रवाचन प्रतियोगिता शिशु से लेकर तरूण वर्ग तक अखिल भारतीय स्तर तक होगी।

10. क्षेत्र में होने वाली प्रतियोगिता में ग्राम भारती के शिशु एवं बाल वर्ग के प्रतिभागी (प्रांतीय विजेता दल सीधे भाग लेंगे)

समूह ‘क’

1. ***व्यक्तिगत गीत :-***

- गीत हिन्दी अथवा संस्कृत भाषा में होना चाहिए। क्षेत्रीय भाषा में गीत मान्य नहीं होगा।
- व्यक्तिगत गीत में प्रस्तावना न दें।
- गीत में न्यूनतम दो चरण और अधिकतम तीन चरण होने चाहिए।
- गीत राष्ट्रभक्ति परक एवं प्रेरणा देने वाला होना चाहिए।
- वाद्य यंत्रों का प्रयोग वर्जित होगा।

2. ***निबन्ध प्रतियोगिता :-***

- इसकी समय सीमा अधिकतम 60 मिनट होगी। प्रत्येक वर्ग को निम्नांकित छः विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखना होगा, जिसे प्रतियोगिता स्थल पर ही निर्णायक द्वारा चिट (पर्ची) उठाकर वर्गशः विषय निश्चित किया जाएगा तथा श्यामपट पर उसे लिखा जाएगा। सभी प्रतिभागियों को निर्णायक द्वारा चिट के आधार पर सुनिश्चित किए गये एक विषय पर निबंध लिखना होगा।

शिशु वर्गः 1. आँवला वृक्ष। 2. बाल कृष्ण। 3. छत्रसाल। 4. माता जीजाबाई। 5. शबरी। 6. गाय हमारी माता है।

बाल वर्गः 1. आदर्श दिनचर्या। 2. अतिथि देवो भवः। 3. अपनी भाषा अच्छी भाषा। 4. जल है तो कल है। 5. मेरी दीदी। 6. योग और स्वास्थ्य।

किशोर वर्गः 1. भगिनी निवेदिता की भारत भक्ति। 2. योग एक जीवन पद्धति। 3. वर्तमान शताब्दी में भारत की प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियाँ। 4. स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत। 5. सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव। 6. सेवा मेरा धार्म।

3. ***रंगोली प्रतियोगिता :-***

- रंगोली प्रतियोगिता के लिये 2x2 फिट का स्थान नियत रहेगा, जिस पर क्रम संख्या अंकित रहेगी।
- प्रत्येक के बीच में 2 फिट का अंतर रखा जाना आवश्यक है।
- समय सीमा अधिकतम 60 मिनट रहेगी।
- प्रतिभागी को रंगोली बनाने के लिए स्थान, क्रमांक का निर्धारण स्वयं चिट उठाकर करना होगा।
- प्रतिभागी चॉक/पेंसिल से रेखांकन न करें। न ही किसी उपकरण का उपयोग करें।
- **रंगोली के विषयः-**
  - रंगोली एक प्राचीन पारंपरिक कला है जो गृह सज्जा, द्वार सज्जा एवं

देव पूजा में प्रयोग की जाती है अतः यह अल्पना, चौकपूरना के रूप में ही बनाई जावे। इसमें विभिन्न सांस्कृतिक चिन्हो (शिशु वर्ग, बाल वर्ग, किशोर वर्ग) का साज-सज्जा के रूप में उपयोग किया जावे।

- रंगोली में देवी-देवता अथवा महापुरूषों के चित्र न हो।
- रंगोली में रंगों के अतिरिक्त अन्य सामग्री का उपयोग वर्जित रहेगा।

विशेषः- रंगोली में काले रंग का उपयोग वर्जित है।

समूह 'ख'

1. ***चित्रकलाः-***

- अधिकतम समय सीमा 60 मिनट होगी।
- शिशु तथा बाल वर्ग को ड्रॉइंग शीट का चौथाई भाग (11'' x 14'') तथा किशोर वर्ग को आधा भाग (14'' x 22'') दिया जाएगा।
- सभी वर्गों में स्केच पेन का उपयोग वर्जित रहेगा।

शिशु वर्गः-

पेंसिल एवं मोम रंग से स्वयं के चुने हुए विषय पर चित्र बनाना है।

बाल वर्गः-

जल रंग द्वारा **भारत माता/चैन्नमा/महाराणा प्रताप)** में से किसी एक का चित्र बनाना है। चित्र का निर्णय निर्णायक द्वारा चिट उठाकर किया जाएगा। (चित्र की आकृति विद्या भारती कुरूक्षेत्र द्वारा प्रकाशित चित्रमाला पर आधारित होना चाहिए।) चित्र प्रतियोगिता स्थान पर प्रतिभागियों के सम्मुख रखा जाना चाहिए।

किशोर वर्गः-

जलरंग से निम्नांकित में से किसी एक विषय का चयन निर्णायक द्वारा चिट उठाकर किया जाएगा। चित्र उसी पर आधारित होगा।

- शबरी के राम
- सीमा के प्रहरी
- स्वच्छता अभियान
- भरत मिलाप
- गोवर्धन लीला

2. ***गीता पाठः-***

- भैया/बहिनों को वर्ग के सम्मुख दर्शाए गए गीता के अध्याय को कण्ठस्थ

करना होगा।

- शिशु वर्ग - त्रयोदश अध्याय (प्रथम 30 श्लोक)
- बाल वर्ग - चतुर्दश अध्याय (सम्पूर्ण अध्याय)
- किशोर वर्ग - पंचदश अध्याय (सम्पूर्ण अध्याय)

- निर्णायक कहीं से भी पाँच श्लोक सुनेंगे।
- श्लोकों का चयन प्रतिभागी चिट उठाकर स्वयं करेंगे।
- चिट पर श्लोक संख्या अंकित रहेगी तथा प्रारम्भ करने के लिये चिट पर प्रथम श्लोक का प्रथम शब्द भी अंकित होगा।
- बाल वर्ग के भैया/बहिनों को उसके द्वारा बोले गए किसी एक श्लोक का भावार्थ स्पष्ट करना होगा।
- किशोर वर्ग के प्रतिभागी को उसके द्वारा बोले गए पाँच श्लोकों में से किसी एक श्लोक को शुद्ध लिखना एवं भावार्थ स्पष्ट करना होगा।

3. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

शिशु वर्ग -*समय सीमा 3 मिनट*

विषय- (1) मेरा गाँव। (2) लवकुश। (3) रानी दुर्गावती।
(4) परोपकार। (5) तुलसी पौधा।
(6) आदर्श विद्यार्थी।

बाल वर्ग -समय सीमा 3 मिनट

विषय- (1) मेरे जीवन का लक्ष्य। (2) वैज्ञानिक भाषा संस्कृत
।
(3) अनुशासन का महत्व। (4) नर सेवा नारायण सेवा।
(5) जैविक खेती
(6) वृक्ष और जल बेहतर कल।

किशोर वर्ग -समय सीमा 4 मिनट

विषय- (1) कौशल विकास (2) स्वच्छ भारत।
(3) स्वभाषा से स्वाभिमान। (4) महर्षि वाल्मीकि।
(5) अभिव्यक्ति की आजादी का दुरुपयोग।
(6) संस्कारित युवा राष्ट्र का गौरव।

समूह 'ग'

(1) आचार्य पत्र वाचन प्रतियोगिता-

विषय-(1) योगः कर्मषु कौशलम्।

नियम-(1) इस कार्यक्रम में प्रत्येक जिला/विभाग से एक आचार्य उपरोक्त में से किसी एक विषय पर दृश्य, श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करते हुए अपना पत्र वाचन करेंगे।

(2) समय सीमा 7 से 10 मिनिट

(3) माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी।

(4) मूल्यांकन-

- तथ्य संग्रह विषय सामग्री - 10 अंक
- अभिव्यक्ति तथा उच्चारण शुद्धि - 10 अंक
- प्रस्तुति एवं दृश्य श्रव्य प्रयोग - 10 अंक
- प्रश्नोत्तर - 10 अंक

कुल - 40 अंक

(5) अपने पत्र वाचन की लिखित एवं चित्रमय सामग्री देना आवश्यक है।

(6) सभी प्रतिभागी पुरस्कृत होंगे।

(2) अखिल भारतीय पत्रवाचन- छात्रों के लिए

नियम :-

1. पत्रवाचन चार वर्गों में आयोजित किया जाएगा:

(क)	शिशु वर्ग	-	कक्षा चतुर्थी एवं पंचमी
(ख)	बाल वर्ग	-	कक्षा षष्ठी,सप्तमी एवं अष्टमी
(ग)	किशोर वर्ग	-	कक्षा नवमी एवं दशमी
(घ)	तरूण वर्ग	-	कक्षा एकादशी एवं द्वादशी

उपरोक्त चारों वर्गों में केवल निर्धारित कक्षाओं के भैया/बहिन ही भाग ले सकेंगे।

2. इस प्रतियोगिता में शिशु, बाल, किशोर एवं तरूण इन चार वर्गों में क्षेत्रीय स्तर पर प्रथम आने वाले भैया/बहिन इस अखिल भारतीय स्तर के पत्रवाचन में

अपने वर्ग के किसी एक विषय पर अपने परिपत्र या लेख का वाचन निम्नलिखित विषयों में से करेगा –

(क)	शिशु वर्ग	–	देश हमें देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें
(ख)	बाल वर्ग	–	हम करें राष्ट्र आराधना।
(ग)	किशोर वर्ग	–	मानवता का त्रास हरें हम।
(घ)	तरूण वर्ग	–	विश्व जानता है भारत का अपराजेय रुधिर।

3. पत्रवाचन हेतु समय इस प्रकार रहेगा –

(क)	शिशु वर्ग	–	5 से 7 मिनट
(ख)	बाल वर्ग	–	5 से 7 मिनट
(ग)	किशोर वर्ग	–	6 से 8 मिनट
(घ)	तरूण वर्ग	–	6 से 8 मिनट

4. पत्रवाचन की विषय सामग्री के आलेख की तीन प्रतियॉं निर्णायकों के लिए तैयार करके लायें ताकि प्रस्तुति के समय उन्हें दी जा सकें।

5. पत्रवाचन का मूल्यांकन –

(1)	विषय सामग्री	– 10 अंक
(2)	दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग	– 5 अंक
(3)	प्रस्तुति एवं समय सीमा	– 10 अंक
(4)	प्रश्नोत्तर	– 5 अंक
	कुल	**– 30 अंक**

6. माध्यम– हिन्दी अथवा अंग्रेजी

मूल्यांकन बिन्दु एवम् अंक विभाजनः–

समूह 'क' 1. व्यक्तिगत गीत – 50 अंक

बिन्दुः	स्वर	उच्चारण शुद्धता	लयताल	प्रस्तुतीकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंक :	10	10	10	10	10	50

2. निबन्ध प्रतियोगिता - 50 अंक

बिन्दुः	विषय वस्तु	मौलिक सोच	सुलेख एवं शुद्ध लेखन	भाषा शैली	प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

3. रंगोली प्रतियोगिता - 50 अंक

बिन्दः	रूपांकन	रंग संयोजन	कला पक्ष रूढ़ि/परंपरा	विषय वस्तु	प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

समूह 'ख' 1. चित्रकला प्रतियोगिता - 50 अंक

बिन्दुः	रूपांकन	रंग संयोजन	कला पक्ष	रेखांकन	प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

2. (क) गीता पाठ (शिशु वर्ग)-50 अंक

बिन्दुः	पाठ की शुद्धता	कंठस्थीकरण	लय	प्रस्तुतीकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

2.(ख) गीता पाठ (बाल, किशोर एवम् तरुण वर्ग)-50 अंक

बिन्दुः	पाठ की शुद्धता	भाव/लेखन स्पष्टता	लय	प्रस्तुतीकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

3. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता - 50 अंक

बिन्दुः	विषय वस्तु	तथ्य	अभिव्यक्ति	प्रस्तुतीकरण	श्रोताओं पर प्रभाव	योग
अंकः	10	10	10	10	10	50

(3) प्रश्न मंच

- इस सम्बन्ध में विद्या भारती संस्कृति बोध परियोजना में दी गई नियमावली एवं विवरणिका का अवलोकन करें। उसमें दिए गए विवरणानुसार सभी नियम यथावत रहेंगे।
- **प्रश्न मंच में सभी पुस्तकें नवीनतम संस्करण की ही मान्य होंगी। पुस्तकों में संशोधन/परिवर्तन होता रहता है।**
- प्रश्न मंच प्रतियोगिता हमारे यहाँ निष्पक्ष रूप से सम्पन्न होती है। इस व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए प्रश्न संच निर्माण की विधि इस वर्ष निम्नानुसार रहेगीः-

(1) कक्षा स्तर पर-

- प्रत्येक कक्षा में तीन-तीन भैया/बहिनों के मान से जितने दल बन सके, उतने दल बना कर प्रश्न मंच सम्पन्न कराना है। सभी भैया/बहिन प्रतिभागी बनें ऐसा प्रयास करें। प्रश्न निर्माणकर्ता तथा प्राश्निक कक्षाचार्य न रहें। वर्ग एवं कक्षा स्तर पर वर्ग एवं कक्षा बदलकर प्रश्नों का निर्माण कराया जाए।

उदाहरण के लियेः-

शिशु वर्ग कक्षा 4 के लिए कक्षा 5 के आचार्य द्वारा तथा कक्षा 5 में कक्षा 4 के आचार्य द्वारा प्रश्न का निर्माण किया जाए तथा सभी प्रश्नों को एक सील बंद लिफाफे में रखकर प्रतियोगिता स्थल पर ही खोला जाए। यही प्रक्रिया बाल, किशोर एवं तरूण वर्ग में अपनायी जाये।

(2) विद्यालय स्तर पर

- कक्षा स्तर पर विजेता दल विद्यालय स्तर के प्रश्न मंच में सहभागी होगा। इस प्रश्न मंच को समारोह पूर्वक आयोजित करें। प्रश्न निर्माण एवं प्राश्निक के रूप में नगर से किसी योग्य व्यक्ति का चयन करें। उन्हें प्रश्न मंच की नियमावली से भली-भांति अवगत करा कर प्रश्न मंच संपन्न कराएं।

(3) जिला स्तर पर

- जिला स्तर पर प्रश्न संच **विभाग समन्वयक** उपलब्ध कराएंगें। अपने विभाग के जिलों से ही प्रश्न संच तैयार करा कर विभाग में ही जिला बदल कर प्रश्न संच भेजे जायेगें। प्रश्नों के लिफाफे व्यवस्थित रूप से बंद रहेगें, जिन्हें प्रतियोगिता स्थल पर सभी के समक्ष खोला जावे।

(4) विभाग स्तर

- विभाग स्तर पर प्रांत के सभी विभागों से प्रश्न संच बुलाये जाएँगे इसकी व्यवस्था संस्कृति बोध परियोजना के प्रांत प्रमुख देखेंगे तथा सभी विभागों से प्रश्न संच बुलाकर विभाग बदलकर प्रश्न संच भेजेंगे। लिफाफे प्रतियोगिता स्थल पर सभी के सम्मुख खोले जाएंगे।

(5) प्रान्त स्तर

- प्रश्न संच की व्यवस्था प्रांत प्रमुख करेंगे।

(6) क्षेत्र स्तर

- क्षेत्र विषय प्रमुख इसकी व्यवस्था करेंगे।

प्रश्नों का निर्माण -

प्राश्निक प्रश्न तैयार करते समय विद्या भारती विवरणिका के नियमों का पालन करें।

1. प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर संक्षिप्त प्रायः एक शब्द, वाक्यांश अथवा एक-एक वाक्य में हो तथा वे जिज्ञासा मूलक, चिंतन प्रेरक तथा संस्कार बोधक हो सकें।
2. प्रश्न में अपेक्षित उत्तर प्राप्त करने के लिए उत्तर ऐसा हो कि संकेत शब्द स्थान, समय, व्यक्ति, दिशा कारण आदि से मिल सके ताकि उत्तर दिशा समझने में भ्रम न हो।
3. समान स्तर के प्रश्न प्रत्येक पुस्तक से छांटे जाए। प्रश्नों की श्रृंखला में लगभग एक ही स्तर के प्रश्नों का होना अपेक्षित है। निरंतर श्रृंखलाओं का स्तर क्रमशः ऊँचा होना चाहिए।
4. प्रश्न मंच में व्याख्यात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रश्नों के लिए कोई स्थान नहीं हैं क्योंकि ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रायः लम्बे होते हैं। प्रश्न ऐसे होंगे जिनका उत्तर संक्षिप्त अर्थात् प्रायः एक शब्द, वाक्यांश अथवा एक वाक्य में ही हो।
5. प्रश्न तथ्यों पर आधारित होंगे। ये प्रश्न किसी एक तथ्य पर अथवा दो या दो से अधिक तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित हो सकते हैं, ताकि वे जिज्ञासा मूलक, चिंतन प्रेरक तथा संस्कार उद्बोधक हो सकें।
6. वस्तुनिष्ठ प्रश्न, अनेक दिए गए उत्तरों में से ठीक उत्तर छांटों, तुलनात्मक अथवा अन्य किसी प्रकार के भी हो सकते हैं। दृष्य-श्रव्य माध्यम का प्रयोग

करके भी प्रश्न प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

7. प्रश्न पुस्तक में दी गई भाषा तथा शैली एक जैसे होना आवश्यक नहीं है। सामग्री को आधार मानकर प्रश्नों की भाषा शैली विविध प्रकार की हो सकती है।

8. प्रश्नों का किसी एक भाग में दी गई सामग्री पर आधारित होना आवश्यक नहीं है। एक प्रश्न में ही पाठ्यक्रम में अलग-अलग स्थानों पर दी गई सामग्री का भी समावेश हो सकता है।

9. प्रश्न सटीक हो तथा पुस्तक में उनमे से एक से अधिक उत्तर प्राप्त न हो। परन्तु यदि पुस्तक में एक से अधिक उत्तर प्राप्त हों तो दोनों को सही मानकर अंक दिए जावें तथा इसकी सूचना कुरूक्षेत्र कार्यालय भेजें।

10. प्रश्न की भाषा यथासम्भव सरल, सुबोध तथा स्पष्ट होगी। प्रश्न का एक ही अर्थ निकलना चाहिए।

11. प्रश्नों तथा उत्तरों का आकार यथासम्भव छोटा रहेगा।

प्रश्नों के संभावित प्रकार

क्र.1 सामान्य प्रश्न (संक्षिप्त उत्तर वाले)

प्रश्न- भारत के राष्ट्रीय पक्षी का नाम बताओ।

क्र.2 वैकल्पिक उत्तर वाले (दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर बताना)

प्रश्न- इनमें से कौन सा ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित है।

(1) रामायण (2) विनय पत्रिका

(3) राम चन्द्रिका (4) राम की शक्ति पूजा

क्र.3 सत्य/असत्य पूछना (हाँ/नहीं के प्रश्न)

प्रश्न- यह कथन सत्य है अथवा असत्य

'जगन्नाथपुरी धाम उड़ीसा राज्य में है।'

यदि कथन असत्य है तो उसका सही उत्तर भी बताना होगा।

क्र.4 शेष जानकारी (पूरक उत्तर) पूछना-(कुछ जानकारी देकर शेष पूछना)

प्रश्न-पुरूषार्थ चार है-पहला-धर्म, दूसरा-अर्थ, तीसरा-काम तो चौथा पुरूषार्थ कौन-सा है?

क्र.5 इनके माता/पिता/गुरू/शिष्य/पति/पत्नि का नाम बतायें।

क्र.6 काल गणना के प्रश्न–सही तिथि, दिनांक एवं वर्ष बतलाएँ।

क्र.7 कविता श्लोक की पंक्ति पूर्ण करें।

क्र.8 रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

● ***प्रश्नोत्तर विधि***

1. प्रश्न तैयार करने वाले प्राश्निक प्रश्न नहीं पूछेंगे अपितु इसकी व्यवस्था विद्यालय के आचार्यों को छोड़कर नगर के विद्वतजनों में से की जाएगी।
2. प्रतिभागियों की बैठक व्यवस्था चिट डालकर की जाए। प्रश्नकर्ता पहला प्रश्न पहले दल से, दूसरा प्रश्न दूसरे दल से, तीसरा प्रश्न तीसरे दल से, क्रमशः पूछना प्रारंभ करेंगे। दूसरे दौर में यह क्रम बदल जायेगा। अर्थात दूसरे दौर का पहला प्रश्न दूसरे दल से, दूसरा प्रश्न तीसरे दल से, तीसरा प्रश्न पहले दल से पूछेंगे। कहने का आशय यह है कि प्रत्येक दौर में नए दल से प्रश्न पूछा जाए। पुनः 12 प्रश्नों तक यही क्रम दोहराया जाए। किसी भी दल से लगातार प्रश्न न पूछा जाए।
3. इस प्रकार सभी पुस्तकों से प्रश्न पूछने को एक चक्र कहा जाएगा। 12 प्रश्नों में यदि निर्णय नहीं होता है, तो समान अंक पाने वाले दलों से दूसरे चक्र में पाँच प्रश्न पूछे जाएगे। दूसरे चक्र में निर्णय न होने पर तीसरे, चौथे चक्र में तीन-तीन प्रश्न होंगे। पांचवे चक्र में एक-एक प्रश्न पूछकर परिणाम निकाला जाएगा।
4. प्रतिभागी दलों के अंकों की गणना सामने रखे गए श्यामपट् पर की जाएगी। एक गणक कागज पर भी अंक तालिका की पूर्ति करें।
5. प्रश्न एक ही बार बोला जाएगा।
6. प्रश्न का उत्तर देने के लिए 25 सेकेण्ड का समय रहेगा। समय गणना पूरा प्रश्न पूछे जाने के तुरन्त बाद आरम्भ होगी। 20 सेकेण्ड बीतने पर चेतावनी की घण्टी बजेगी 25 सेकेण्ड का समय बीतने पर दो घण्टी बजाकर समय पूरा होने की सूचना दी जाएगी।

7. पुस्तक में लिखा उत्तर ही सही उत्तर माना जाएगा। यह उत्तर पुस्तक में दी गई सामग्री पर ही आधारित होगा और वही सही उत्तर माना जाएगा। उत्तर देने में तीनों प्रतिभागी आपस में परामर्श कर सकेंगे। तीनों में से किसी एक के द्वारा दिया गया उत्तर स्वीकार किया जाएगा। प्रथम दिया गया उत्तर ही अन्तिम उत्तर होगा।

8. अस्पष्ट, अधूरे, गलत अथवा कोई उत्तर न दिए जाने की दशा में प्रतिभागी टीम को शून्य अंक मिलेगा। पूरा, सही और समय पर दिए गए उत्तर का पूरा अंक प्रतिभागी टीम को मिलेगा।

9. उच्चारण में भिन्नता स्वीकार होगी यद्यपि उत्तर की शुद्धता अनिवार्य है। उत्तर के सही या गलत होने की घोषणा प्राश्निक उच्च स्वर में करेंगे। गलत उत्तर होने पर कार्ड के आधार पर सही उत्तर की घोषणा भी प्राश्निक उच्च स्वर में करेंगे। उसी के अनुसार प्रतिभागी टीमों के अंकों की गणना सामने रखे गए श्यामपट्ट पर सही व गलत चिन्हों द्वारा दर्शायी जाएगी।

10. उत्तर के सही, पूर्ण तथा समय में दिए जाने का निर्णय प्राश्निक महोदय प्रश्न कार्ड में दिए गए उत्तर के आधार पर करेंगे। इस विषय में प्राश्निक महोदय का निर्णय मान्य होगा परन्तु किसी सम्भ्रम की स्थिति में निर्णायक महोदय का निर्णय सर्वमान्य होगा।

- ***प्रश्नों की संख्या एवम् अंक विभाजन –***

1. प्रतियोगिता में प्रश्नों का एक चक्र होगा। आवश्यकता पड़ने पर प्रश्नों का दूसरा, तीसरा अथवा चौथा चक्र भी हो सकेगा। प्रथम चक्र में बारह प्रश्न होंगे। प्रत्येक पुस्तक से प्रश्न पूछना अनिवार्य है।

2. प्रत्येक प्रश्न की एक श्रृंखला होगी। प्रत्येक श्रृंखला में समान स्तर के उतने ही प्रश्न होंगे जितने कि प्रतिभागी प्रदेश समितियां रहेंगी। इस प्रकार प्रश्न कार्डो की कुल संख्या प्रतिभागी समिति की संख्या के बारह गुणा के बराबर होगी।

3. प्रश्न तथा उनके उत्तर कार्डो को मिलाकर उनकी क्रम संख्या निर्धारित करके उन्हें उसी क्रम में बांधकर रखा जाएगा।

वर्ग	पुस्तक का नाम	**चक्र एवं प्रश्न संख्या.**				
शिशु वर्ग		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
•	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा 4 (18-19)	3	1	-	1	-
•	संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्नोंत्तरी कक्षा 5 (18-19)	3	1	1	-	-
•	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग-1 प्रथम 15 पाठ(एकादश संस्करण)	3	2	1	1	-
•	प्रेरणादीप भाग-1 (षष्ठ संस्करण)	3	1	1	1	-
	कुल	**12**	**5**	**3**	**3**	**-**

वर्ग	पुस्तक का नाम	**चक्र एवं प्रश्न संख्या**				
बाल वर्ग (कक्षा 6 से 8 तक)		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
•	संस्कृति ज्ञान परीक्षा कक्षा-6 (18-19)	2	1	-	-	-
•	संस्कृति ज्ञान परीक्षा कक्षा-7 (18-19)	2	1	-	-	-
•	संस्कृति ज्ञान परीक्षा कक्षा-8 (18-19)	2	1	-	-	-
•	व्यावहारिक खगोल परिचय प्रथम 6 पाठ(सप्तम् संस्करण)	1	1	1	1	-
•	प्रेरणा दीप भाग-2 (षष्ठ संस्करण)	2	1	-	1	-
•	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग-1 पाठ 16 से 32 तक(एकादश संस्करण)	2	-	1	-	-
•	परमवीर छत्रसाल	1	-	1	1	-
	कुल	**12**	**5**	**3**	**3**	**-**

वर्ग	पुस्तक का नाम	चक्र एवं प्रश्न संख्या				
किशोर वर्ग (कक्षा 9 व 10 वी)		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
●	स.ज्ञा.परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा-9 (18-19)	2	1	-	-	-
●	स.ज्ञा.परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा-10 (18-19)	2	1	-	-	-
●	व्या. खगोल परिचय (सप्तम् संस्करण)	2	1	1	-	-
●	प्रेरणा दीप भाग-3 (पंचम् संस्करण)	1	-	1	1	-
●	हमारे राष्ट्र निर्माता भाग-2 (अष्टम् संस्करण) (पाठ 1 से 25 तक)	2	1	1	1	-
●	सामाजिक समरसता और हमारे संत	2	-	-	1	-
●	हमारे छत्रसाल	1	1	-	-	-
	कुल	**12**	**5**	**3**	**3**	**-**

वर्ग	पुस्तक का नाम	चक्र एवं प्रश्न संख्या				
तरूण वर्ग (कक्षा 11 व 12 वीं)		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
●	स.ज्ञा.परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा-11 (18-19)	2	1	-	-	-
●	स.ज्ञा.परीक्षा प्रश्नोत्तरी कक्षा-12 (18-19)	2	1	-	-	-
●	व्यावहारिक खगोल परिचय (सप्तम् संस्करण)	2	1	1	-	-
●	प्रेरणा दीप भाग-4 (तृतीय संस्करण)	1	-	1	1	-

• हमारे राष्ट्र निर्माता भाग–2 (अष्टम् संस्करण) (पाठ 26 से 41 तक)	2	1	1	1	–
• सामाजिक समरसता और हमारे संत	2	–	–	1	–
• हमारे छत्रसाल	1	1			
कुल	**12**	**5**	**3**	**3**	–

प्रश्नों चक्र संख्या – वर्ग :– ....

क्र.	नाम	विद्यालय	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	योग

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूची का प्रारूपः–

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	नाम	पिता	कक्षा	विद्यालय	जिला	प्रांत	परिणाम

समूह 'घ'

(क) शास्त्रीय गायन

- गायन खयाल पद्धति पर होगा।
- समय सीमा 10 मिनिट।
- अधिकतम दो संगत कलाकार साथ ला सकते है। (ये कलाकार किसी भी आयु के हो सकते हैं। प्रतियोगिता में इनका शुल्क रहेगा, परन्तु प्रमाण–पत्र या पुरस्कार इन्हें नहीं दिया जाएगा।)
- इलेक्ट्रानिक तानपुरा प्रयोग किया जा सकता है। हारमोनियम का प्रयोग तानपुरा के स्थान पर सिर्फ स्वर देने के लिए कर सकते है।

(2) (ख) <u>शास्त्रीय नृत्य (कथक)</u>

- समय सीमा 10 मिनिट। ● ध्वनि मुद्रिका (कैसेट) का प्रयोग वर्जित है।
- अधिकतम तीन संगत कलाकार साथ ला सकते है। (ये कलाकार किसी भी आयु के हो सकते हैं। प्रतियोगिता में इनका शुल्क रहेगा, परन्तु प्रमाण-पत्र या पुरस्कार इन्हें नहीं दिया जाएगा।)

(ग) <u>तबला वादन</u>

- समय 10 मिनिट।
- एक संगत कलाकार लहरे/नगमा के लिए ला सकते हैं। (ये कलाकार किसी भी आयु के हो सकते हैं। प्रतियोगिता में इनका शुल्क रहेगा, परन्तु प्रमाण-पत्र या पुरस्कार इन्हें नहीं दिया जाएगा।)

(घ) <u>अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता</u>

- प्रत्येक दल में तीन भैया/बहिन रहेंगे।
- प्रत्येक वर्ग में एक दल ही भाग ले सकेगा।
- प्रतियोगिता रामचरित मानस तक ही सीमित रहेगी। गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा मुद्रित रामचरित मानस ही निर्णय में आधार मानी जाएगी। जो प्रतियोगिता के समय निर्णायक के पास रहना आवश्यक है।
- प्रथम दल संचालक द्वारा प्रारंभ पंक्तियों के अंतिम शब्द के अंतिम अक्षर से प्रारंभ होगा।
- चौपाई, दोहा, छन्द, लय में बोलना होगा।
- चरण बदलकर बोला गया छन्द गलत माना जायेगा।
- एक प्रतिभागी द्वारा कही गई रचना उसी वर्ग के किसी दल द्वारा किसी भी चक्र में पुनः स्वीकार्य नहीं होगी।
- प्रथम दल की प्रस्तुत रचना के अंतिम अक्षर से अगले दल को रचना प्रस्तुत करना है। उदा-

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुणगान।
सादर सुनहिं ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान॥

में अगले दल से 'न' अक्षर से कविता प्रारंभ करना होगा।

- स, श, ष आने पर इनमें से किसी का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- ष जहाँ ख के अर्थ में आया है वहाँ ख ही मान्य होगा। उदा.–

  कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा।

  लछिमन राम चरित सब भाषा।।

- व, ब के स्थान पर किसी का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- अन्त में ड़ या ढ़ आने पर उनके स्थान पर क्रमश: ड और ढ का प्रयोग किया जा सकता है।
- प्रथम चक्र में प्रत्येक दल को 10 बार, द्वितीय में 5 बार, तृतीय में 3 बार, एवं इसके बाद एक–एक बार निर्णय होने तक अवसर प्राप्त होंगे।
- प्रथम चक्र में सभी दल एवं अगले चक्रों में केवल समान अंक वाले दल सम्मिलित होंगे।
- किसी दल द्वारा प्रस्तुति में असमर्थ रहने पर या गलत प्रस्तुति पर 30सेंकड पश्चात् उसी अक्षर से अगले दल को तत्काल रचना प्रारंभ करना होगी।
- प्रत्येक सही प्रस्तुति हेतु एक अंक, गलत, अपूर्ण अथवा अशुद्ध प्रस्तुति को शून्य अंक मिलेगा।
- किसी भी दल द्वारा रचना प्रस्तुत न हो सकने की दशा में पूर्व से वर्णाक्षर लिखी पर्चियों में से निर्णायक द्वारा एक पर्ची उठाकर उस दल को नया अक्षर दिया जाएगा। नया अक्षर मिलने पर 30 सेंकड का समय दिया जाएगा।
- निर्णायक द्वारा ही अंतिम रूप से पाठ की शुद्धता का निर्णय दिया जाएगा जो सभी को मान्य होगा।

(ड.) *एकल अभिनय*

- समय सीमा 5 मिनिट रहेगी।
- संवाद या पार्श्व संगीत के लिए किसी संगत कलाकार या टेप रिकार्डर का उपयोग वर्जित है। अभिनय में सांस्कृतिक मर्यादा का ध्यान रखें (अश्लीलता एवं शराबी का अभिनय वर्जित है)

समूह ड.

(क) *स्वरचित कविता*

- प्रतियोगिता स्थल पर तीनों वर्गों को एक घंटे पूर्व एक-एक कविता पंक्ति अथवा शीर्षक दिया जाएगा। जिन पर प्रतिभागियों को अपनी रचना लिखकर निर्धारित समय पर निर्णायकों के समक्ष प्रस्तुत कर उनका पाठ भी करना होगा।

(ख) वन्दे मातरम् गायन प्रतियोगिता

1. प्रत्येक दल में तीन भैया /बहिन रहेगें।
2. प्रत्येक वर्ग में एक दल ही भाग ले सकेगा।
3. गायन विद्या भारती द्वारा निर्धारित ध्वनि मुद्रिका (कैसेट) का स्वर ही मान्य होगा।

(ग) एकल भजन (समय- 4 मिनिट)

1. भजन किसी भाषा या बोली में हो सकता है। भजन फिल्मी गीत या पैरोड़ी में न हो। वाद्य यंत्रों का प्रयोग कर सकते है।

शास्त्रीय गायन :-

बिन्दु	स्वर	ताल	राग	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

शास्त्रीय नृत्य :

बिन्दु	ताल	अभिनय	वेश	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

तबला वादन :

बिन्दु	ताल	लय	स्पष्टता	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

एकल अभिनय :

बिन्दु	अभिनय	वेश	विषय चयन व निर्वाह	प्रस्तुति	प्रभाव	योग
अंक	10	10	10	10	10	50

स्वरचित काव्य पाठ :

बिन्दु	भावपक्ष	कलापक्ष	पाठनशैली	योग
अंक	20	20	10	50

- ***प्रतियोगिता सम्बन्धी व्यवस्थाएं***

1. व्यवस्था सम्बन्धी निर्देशों का पालन विद्यालय से लेकर क्षेत्रीय स्तर तक समान रहेगा।
2. प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए अलग–अलग आचार्यों को स्वतंत्र रूप से दायित्व सौंपा जाए।
3. प्रतियोगिता प्रारंभ होने से 15 मिनट पूर्व निर्धारित कक्षा में उपस्थित होकर आचार्य गण निम्नांकित दायित्व सम्पन्न करेंगे :–
   - श्यामपट पर प्रतियोगिता का नाम, समय, दिनांक एवं वर्ग का उल्लेख किया जाए, कार्यक्रम की समयावधि भी अंकित करें।
   - प्रतिभागियों को प्रवेश पत्र देकर प्रवेश दें तथा प्रतिभागियों की बैठक की वर्गशः व्यवस्था हो।
   - प्रतियोगिता संबंधी नियम जिनका पत्रक में उल्लेख है, भैया/बहिनों की प्रतियोगिता प्रारंभ होने के पूर्व पढ़ कर दोहराएं।
   - प्रतियोगिता में लगने वाली सामग्री का वितरण करना।
   - चित्रकला तथा निबंध प्रतियोगिता की सामग्री तत्काल निर्णायकों को देवें।
   - निर्णय की अधिकृत जानकारी प्राप्त कर तत्काल प्रमाण पत्र लेखक को सौंप दें।

- परिणाम की सूचना परिणाम पत्रक तैयार कर रहे आचार्य को निम्न शीर्षकों के अंतर्गत दें।

परिणाम पत्रक के शीर्षक

वर्ग	प्रतियोगिता	प्रतियोगी का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विद्यालय का नाम	प्रांत

प्रतिभागियों का नामांकन एवं सहभागिता

- परिसर में प्रवेश करते ही संरक्षक आचार्य दीदी प्रतिभागी का नामांकन आयोजन स्थल पर करावें तथा निर्धारित शुल्क जमा कर पावती लें।
- नामांकन होते ही प्रवेशिका प्राप्त करें तथा उसे सदैव लगाएं रखें।
- प्रतिभागी के परिचय पत्र (फोटो) सहित लाएं। जिला स्तर से ही इस प्रकार का रिकार्ड तीन प्रतियों में तैयार करवा लिया जाएं ।
- समस्त प्रतिभागियों की सूची (परिणाम पत्रक में दिए गए शीर्षकों के आधार पर) तैयार करके कार्यालय में जमा कर दें।

आयोजन स्थल पर लगने वाली प्रदर्शनी के संबंध में

- प्रदर्शनी का आयोजन पृथक से पंडाल में विद्यालय, जिला, संभाग व प्रांत स्तर पर किया जाएं।

1. ***स्वदेशी प्रदर्शनी*** - स्वदेशी वस्तुओं की सूची टांगे तथा वे किस स्थान से प्राप्त की जा सकती हैं, उसकी सूची भी दें ताकि दर्शकों को पूर्ण जानकारी मिल सके।
2. ***112 चित्रों की प्रदर्शनी***- विद्या भारती (अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान) कुरूक्षेत्र द्वारा प्रकाशित 112 चित्रें की प्रदर्शनी लगाई जाए तथा चित्रों को शीर्षकों के अंतर्गत रखा जाएं, यथा महापुरूषों के चित्र, स्वतंत्रता आंदोलन के चित्र, वैज्ञानिक, धार्मिक महापुरूषों के चित्र आदि जिससे विषय वस्तु समझने में दर्शकों को कठिनाई न हो।
3. ***साहित्य स्टॉल***- प्रेरणादायक पुस्तकों को विक्रय हेतु रखा जाए। इस सम्बन्ध में शारदा प्रकाशन से भी सम्पर्क किया जा सकता हैं। साथ-साथ हमारे

धार्मिक ग्रंथ विशेषकर–वेद उपनिषद्, पुराण आदि की प्रदर्शनी भी लगाई जाए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जितना साहित्य उपलब्ध हो सके रखा जाए। (वंदे मातरम्, संस्कृति, सरस्वती, संस्कृत संबंधी साहित्य अवश्य रखा जाए।)

4. रंगमंच का निर्माण करते समय हमारे धार्मिक प्रतीकों को पंडाल में अथवा मुख्य द्वार पर रखे जाए अथवा उनकी अनुकृति बनाई जाएं।

5. संस्कृत भाषा, योग एवम् वनवासी जीवन पर केन्द्रित प्रदर्शनी लगाई जाए।

आलोकः–

प्रत्येक प्रतिभागी को वंदना, एकात्मता स्तोत्र, प्रातः स्मरण, भोजन मंत्र एवम् वार्षिक गीत (हिन्दी) याद करके आना हैं। प्रश्नमंच में भी इस पर आधारित प्रश्न शामिल किए गए हैं।

0000

बौद्धिक प्रश्नमंच समारोह 2018-19

परिचय-पत्र

सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर................................

जिला .... विभाग ....

वर्गः-............... समूह-.............................

नाम/विद्यार्थी...

आत्मज/आत्मजा .... मोबाईल................

जन्मतिथि .... शब्दों में ....

विद्यालय में प्रवेश तिथि- ....कक्षा ....

विद्यालय का सम्पूर्ण पता- ....

प्रतियोगिता का विषय 1. ....

2. ....

प्रतिभागी के हस्ताक्षर कक्षाचार्य के हस्ताक्षर हस्ताक्षर प्राचार्य

दूरभाष (विद्यालय)..............

निवास ....

जिला प्रतियोगिता	विभाग प्रतियोगिता	प्रांत प्रतियोगिता	क्षेत्र प्रतियोगिता
प्रति.स्थल........	प्रति.स्थल.........	प्रति.स्थल.........	प्रति.स्थल...........
जिला............	संभाग	प्रांत	क्षेत्र ....
परिणाम.........	परिणाम...........	परिणाम	परिणाम.............

हस्ताक्षर संयोजक हस्ताक्षर संयोजक हस्ताक्षर संयोजक

हस्ताक्षर संयोजक

अखिल भारतीय हिन्दी गीत

सत्र- 2018-19

प्राथमिक कक्षाओं हेतु

कितना सुंदर कितना प्यारा देश हमारा।
दुनिया के सारे देशों से है यह न्यारा।।

1. धरती से अम्बर तक इसका,
ऊँचा ध्वज है मस्तक जिसका।
सबने हिमगिरी नाम पुकारा ।। कितना सुंदर.....................

2. वन उपवन में हरियाली है,
डालों पर छाई लाली है।
नदियों की पावन जलधारा ।। कितना सुंदर.....................

3. कंचन सा तन केश सुनहरा,
धोए चरण को सागर गहरा ।
लहरों ने जिसको ललकारा ।। कितना सुंदर....................

4. सारे जगत में इसकी जय हो,
इसका जन-जन सदा अभय हो ।
सुर-नर मुनि सब यही उचारा ।। कितना सुंदर..................

000

अखिल भारतीय हिन्दी गीत

सत्र- 2018-19

(माध्यमिक कक्षाओं हेतु)

हम भारत के स्वाभिमान है ऋषि मुनि की संतान
देश हमारा सबसे न्यारा प्यारा हिंदुस्थान।।

1. गौरवशाली परम्पराएँ, यह इतिहास बताता
भेदभाव है नहीं किसी से, सबसे अपना नाता,
सबसे अपना नाता राम कृष्ण की पुण्य धरा यह, सुंदर स्वर्ग समान।।
देश हमारा..............

2. हम मेहनत से चमकाएँगे, भारत माँ का भाल
डरते है हम नही किसी से, खड़ा हो चाहे काल,
खड़ा हो चाहे काल सकल विश्व में गूंज रहा है, जगजननी का गान।।
देश हमारा..............

3. नई सोच और नई दृष्टि ले, भारत श्रेष्ठ बनाएँगे
इस तकनीकी युग में हम, जग में सिरमौर कहाएँगे,
जग में सिरमौर कहाएँगे स्वच्छ रहेंगे स्वस्थ बनेंगे जन-जन का अभियान।।
देश हमारा...............

4. आज हमारी प्रतिभा का, सारा जग लोहा मान रहा
ये भारत श्रेष्ठ सदा से है, यह नारा फिर से गूंज रहा,
यह नारा फिर से गूंज रहा हम भारत माँ के बच्चे हैं, अमिट हमारी शान।।
देश हमारा................

अखिल भारतीय-संस्कृत गीतम्
सत्र 2018-19

देवि देहिनो बलं
धैर्य वीर्य संबलं
राष्ट्र मान वर्धनाय
पुण्य कर्म कौशलं।।देवि देहि।।
चण्ड मुण्ड नाशिनी
ब्रह्म शांति वर्षिणी
तेजोसाते जात नाश
आसु दुःख यामिनिं
भातु धर्म भास्करं
आर्य शक्ति पुष्टमस्तु
भारतम् निर्गलम।।देवि देहि।।
साधुवृन्द पालिके
विश्व धात्रि कालिके
दैत्य दर्प ताप शाप
कालिके करालिके
रक्ष आर्य संस्कृतिं
वर्धयार्य संहतिं
वेदमंत्रपुष्टमस्तु
भारतम् समुत्तुलम्।।देवि देहि।।

भावार्थ- इस कविता में कवि भारतमाता को शक्ति का रूप मानकर प्रार्थना करता है। दुर्गा माँ के रूप में, कालिका रूप में भारत वर्ष को सदैव उन्नति को प्राप्त होने की प्रार्थन की है।

000